# सहजोबाई की वाणी में गुरू की महत्ता

**गीता शर्मा**
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
सरूप रानी राजकीय महाविद्यालय,
अमृतसर

**सारांश**

''गुरू के प्रताप से ही गूंगा व्यक्ति बोलने लगता है गुरू तो ज्ञान का ऐसा दीपक है जिसकी 'लौ' से सारा संसार जगमगा उठता है''

निस्कर्ष रुप में, कहा जा सकता है कि गुरु की कृप्या के बिना सत्य ज्ञान नहीं मिल सकता, जिसे गुरु की प्राप्ति नहीं होती वह अधुरा रह जाता है क्योंकि गुरु के प्रताप से ही गुंगा व्यक्ति बोलने लगता है। गुरु तो ज्ञान का ऐसा दीपक है, जिसकी लौ से सारा संसार जगमगा उठता है।

**मुख्य शब्द :** गुरु, गुरु की महत्ता,सन्त, साधना, साधक, ज्ञान की प्राप्ति।

**प्रस्तावना**

मध्यकालीन भारतीय धर्म साधना में उत्तर भारत में विकसित होने वाली निर्गुण परम्परा में पूर्ववर्ती उपनिषद और योगधारा के अतिरिक्त आगम धारा का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है । सिद्ध नाथ परम्परा में जिस साधना पद्धति का प्रचार हुआ था उसमें दक्षिण की अलवार भक्ति का पुट भी निर्गुण काव्य धारा प्रारम्भ हुई । निर्गुण काव्य धारा के उदय के समय इस्लाम तथा सूफियों ने भी अपनी प्रेम साधना द्वारा लोकमानस को प्रभावित किया । ऐसे समय में भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का श्रेय मध्यकालीन की लोक संत काव्य धारा को जाता है । आज भी हम सन्त महात्माओं द्वारा बताये गये ज्ञान और ज्ञान प्रकाश की किरणों से सन्त मार्ग पर आगे बढ़ सकने में समर्थ है । यह संत मत की विशिष्टता है। जयदेव से प्रारम्भ होने वाली इस सन्त काव्य परम्परा का कबीर रैदास, दादू नानक आदि सन्तों द्वारा जिस रूप में पुष्टिकरण हुआ है, वह लगभग उत्तर भारत में प्रचलित है। सन्त महात्माओं ने अपनी वाणी द्वारा जिस प्रकार लोक संस्कृति को स्पष्ट किया है उसे परवर्तीय सभी सन्तों ने स्वीकार किया है ।

निर्गुण काव्य परम्परा में जिन सन्तों ने छोटे बड़े सम्प्रदायों का प्रवर्त्तन किया उसी परम्परा में चरणदायी सम्प्रदाय का नाम आता है। चरणदास जी के बावन शिष्य थे । उन्हीं शिष्यों में सहजोबाई का नाम प्रमुख है । सहजोबाई मेवाड़ की रहने वाली थी । सहजोबाई में प्रेम की प्रधानता है ''क्योंकि मनुष्य परमात्मा रूपी पिता की सन्तति है और मनुष्य के हृदय में परमात्मा के प्रति कुछ न कुछ प्रेम अवश्य रहता है''[1] ।

सहजोबाई ने अपने काव्य द्वारा भारतीय सन्त धारा में एक नवीन दीप जलाकर जो ज्योति ज्योतित की उससे मानवता को तत्युगीन की सामाजिक पीड़ाओं में शान्ति का एक नवीन मार्ग दिया । सहजोबाई द्वारा प्रदत्त इस प्रकाश ने मृग–मानवता को एक नवीन जीवन प्रदान किया ।

सहजोबाई ने सन्त साधना को बड़े उल्लासपूर्ण भाव से एक ऐसी गति प्रदान की जो कबीर आदि सन्तों से चली आ रही थी जिससे निर्गुण विचारधारामानव कल्याण पथ पर और आगे बढ़े । सहजोबाई ने अपनी वाणी में अपने गुरू की उपमा की क्योंकि गुरू ही मनुष्य को अन्धकार से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाता है जिससे मनुष्य को नवजीवन का संचार होता है। सहजोबाई अपने गुरू के सम्बन्ध में कहती है :–

चरणदास गुरूदेव भेव मोहि अगम बतायौ
जोग जुगत सू दुलभ, सुलभ कहि दृष्टि दिखायौ

सहजोबाई के काव्य में निष्ठा की एक दीप्ति प्राप्त होती है और वह थी अपने गुरू के प्रति अगाध निष्ठा''2 सहजोबाई ने अपनी वाणी 'सहज प्रकाश' अपने गुरू को समर्पित की । उनके अनुसार सतगुरू में वह शक्ति है जो व्यक्ति के जीवन को परिवर्तित कर देने की सामर्थ्य रखती है। वही बिगड़े हुए काम को बनाता है । सहजोबाई अपनी वाणी में कहती है गुरू के आदेश के बिना किसी मार्ग का ग्रहण न करें अर्थात् गुरू ही पथ प्रशस्त कर्त्ता है जैसेः

गुरू बिन मारग न चलै, गुरू बिन लहै न ज्ञान
गुरू बिन सहजो धुन्ध है, गुरू बिन पूरी हाव

सहजोबाई कहती है कि गुरू ज्ञान का प्रकाश देने वाला होता है । गुरू उपदेश में शिष्य का भ्रम एवं अज्ञान दूर हो जाता है ।

सहजोबाई कहती है कि गुरू ज्ञान का प्रकाश देने वाला होता है । गुरू उपदेश में शिष्य का भ्रम एवं अज्ञान दूर हो जाता है । ऐसे ज्ञानवान 'गुरू से एक क्षण पृथक नहीं होना चाहिए क्योंकि ज्ञानवान गुरू तपस्या से ही मिल पाता है । जब हरि की कृपा होती है तभी सतगुरू की प्राप्ति होती है । सहजोबाई 'गुरू' को त्रिभुवन का स्वामी कहती है और शिष्य को अपने गुरू के प्रति श्रद्धा का भाव रखना चाहिए क्योंकि सतगुरू एक ऐसा हंस नीर क्षीर विवेकी है जो शिष्य के मन में सत्यता के भाव को जाग्रत करने में समर्थ है''3 सहजोबाई के अनुसार गुरू दीपक की तरह होता है जो ज्ञान के प्रकाश से समस्त संसार में प्रकाश फैलाता है जैसे

गुरू पारस दीपक गुरू
मलयगिरि गुरू भृंग

सहजोबाई कहती है कि साधक के लिए गुरू की अनिवार्यता इसीलिए भी है क्योंकि वह अपनी आध्यात्मिक साधना में कोई भी विघ्न उपस्थित होने पर गुरू से ही मार्ग निर्देश प्राप्त करता है क्योंकि साधक एक ऐसा यात्री होता है जो लक्ष्य की ओर बढ़ने की लालसा तो रखता है किन्तु लक्ष्य उसे तब तक स्पष्ट नहीं होता जब तक गुरू उसे सही दिशा–निर्देश नहीं देता । सतगुरू क्योंकि स्वयं अपने मन में संशयों से पूर्णतः मुक्त होता है। इसलिए वही साधन को संशयों से मुक्त कर सकता है । गुरू साधक को दोष और दुर्गुणों को दूर कर उसे स्वर्ण की भांति खरा और निर्मल बना देता है । यही कारण है कि गुरू को परमात्मा से बढ़कर माना जाता है। सहजोबाई अपनी वाणी में कहती है कि गुरू ही ज्ञान का दीपक जलाता है, और व्यक्ति को भवसागर पार उतारता है । यह एक ऐसा मार्ग है जिसे कोई चुरा नहीं सकता और इस मार्ग पर चलकर व्यक्ति को किसी तरह का कोई भय नहीं रहता ।

सहजोबाई के अनुसार गुरू की दृष्टि में जाति–पाति का भेदभाव नहीं वह तो सभी पर अपनी कृपा दृष्टि रखता है जिससे जीवन चौरासी लाख योनियों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। सहजोबाई गुरू महिमा को व्यक्त करते हुए कहती है कि गुरू तो वह रंगरेज है जो सब ही को भक्ति के रंग में रंग देता है वह कहती है

सहजो गुरू रंगरेज सा, ही कूँ रंग देत
जैसा तैसा बसन हवै जो कोई भावै सेत

इस प्रकार गुरू व्यक्ति को भवसागर पार उतारता है और उसकी कृपा से कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाते हैं और काम, क्रोध, लोभ, अहंकार में फँसे व्यक्ति को अपने ज्ञान के अन्धकार से निकालता है ।

**पुस्तक सूची**

1. व्यथित श्री, 1989, प्रेम और भक्ति की अमर साधिकायें, दिल्ली प्रेम प्रकाशन मन्दिर, पृ:138
2. अवस्थी देवी शंकर, 1968, अठारहवी शताब्दी के ब्रज भाषा काव्य में प्रेम भक्ति, नईदिल्ली, अक्षर प्रकाशन, पृ:360
3. सहजोबाई,1913,सहजोबाई की वाणी सहज प्रकाशन, इलाहाबाद, वेलवेडियरप्रेस, पृ:2
4. सहजोबाई, 1913, सहजोबाई सहज प्रकाशन, इलाहाबाद, वेलवेडियरप्रेस, पृ:2